



CSIR

**COMBINED ADMINISTRATIVE SERVICES
EXAMINATION (CASE)**

**SECTION OFFICER (GEN/F&A/S&P) AND ASSISTANT
SECTION OFFICER (GEN/F&A/S&P)**

भाग - 5

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी



COMBINED ADMINISTRATIVE SERVICES EXAMINATION
(CASE – 2023)

S.No.	Chapter Name	Page No.
1.	भौतिक विज्ञान <ul style="list-style-type: none">• गति• बल• गुरुत्वाकर्षण• कार्य• ऊर्जा• आवर्त गति एवं तरंग• प्रकाश• दर्पण• विद्युत धारा	1
2.	रसायन विज्ञान <ul style="list-style-type: none">• द्रव्य• अणु• रसायनिक बंध• रासायनिक अभिक्रिया एवं समीकरण• अम्ल, क्षार एवं लवण	19
3.	जीव विज्ञान <ul style="list-style-type: none">• संघ – एनिलिडा• संघ – मोलास्का• संघ – आर्थोपोडा• संघ – इकाईनोडर्मेटा• संघ – हेमीकॉर्डेटा• संघ – कॉर्डेटा• पादप जगत• कोशिका - पादप व जन्तु कोशिका, संरचना व कार्य• ऊतक• जीव जगत• जीवाणु• विषाणु• माइकोप्लाज्मा• जनन	33
4.	अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी <ul style="list-style-type: none">• मूल बातें• जियो इमेजिंग सैटेलाइट या GISAT• अंतरिक्ष प्रदूषण• प्रक्षेपण यान• अंतरिक्ष वाहनों में प्रयुक्त प्रणोदक• अंतरिक्ष संगठन:• प्रमुख अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष मिशन	76
5.	जैव प्रौद्योगिकी <ul style="list-style-type: none">• प्रासंगिकता• DNA या डीऑक्सीराइबोन्यूक्लिक एसिड	90

	<ul style="list-style-type: none"> • DNA श्रृंखला • डीएनए बार कोडिंग • व्यवहारिक अनुप्रयोग • जीन संपादन • पर्यावरण जैव प्रौद्योगिकी • जैव प्रसंस्करण के चरण • भारत में जैव प्रौद्योगिकी • राष्ट्रीय जैव प्रौद्योगिकी विकास रणनीति • mRNA प्रौद्योगिकी 	
6.	<p>नैनो प्रौद्योगिकी</p> <ul style="list-style-type: none"> • नैनो प्रौद्योगिकी का इतिहास: • नैनो प्रौद्योगिकी की पीढ़ी • प्रकार • नैनो सामग्री: • नैनो प्रौद्योगिकी के अनुप्रयोग • नैनो प्रौद्योगिकी के प्रतिकूल प्रभाव • भारत में नैनो तकनीक • इस क्षेत्र में सरकार के प्रयास 	101
7.	<p>कंप्यूटर और सूचना प्रौद्योगिकी</p> <ul style="list-style-type: none"> • सूचना प्रौद्योगिकी (IT) • कंप्यूटिंग • इंटरनेट • डिजिटल संचार • मोबाइल तकनीक • लेजर प्रौद्योगिकी • क्लाउड आर्किटेक्चर • इंटरनेट ऑफ थिंग्स • ऑप्टिकल फाइबर • बेतार प्रौद्योगिकी • क्रिप्टो प्रौद्योगिकी-ब्लॉकचेन प्रौद्योगिकी • कृत्रिम बुद्धिमत्ता • रोबोटिक • क्वांटम कम्प्यूटिंग • 3-D प्रिंटिंग या योजक विनिर्माण: 	108
8.	<p>परमाणु प्रौद्योगिकी</p> <ul style="list-style-type: none"> • परमाणु ऊर्जा <ul style="list-style-type: none"> ○ परमाणु विखंडन ○ परमाणु संलयन ○ परमाणु ईंधन ○ परमाणु ईंधन का उत्पादन • विकिरण • रेडियोधर्मिता • परमाणु अपशिष्ट प्रबंधन • भारत में परमाणु कार्यक्रम • भारत में परमाणु रिएक्टर • परमाणु ऊर्जा को बढ़ावा देने के लिए जिम्मेदार संगठन 	127

	<ul style="list-style-type: none"> परमाणु और रेडियोलॉजिकल आपदाएं 	
9.	रक्षा <ul style="list-style-type: none"> नियामक प्राधिकरण भारत में मिसाइल रक्षा प्रणाली: सैन्य मिसाइलों के प्रकार वायु रक्षा प्रणाली मानव रहित हवाई वाहन (ड्रोन) रुस्तम मानव रहित हवाई वाहन के प्रकार पनडुब्बियों भारतीय नौसेना के विमानवाहक पोत हल्का लड़ाकू विमान 	138
10.	योजनाएं और नीतियां <ul style="list-style-type: none"> जैव प्रौद्योगिकी विभाग इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी विभाग (DeitY) विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग राष्ट्रीय विज्ञान, प्रौद्योगिकी और नवाचार नीति 	148



गति (Motion)

- किसी वस्तु, कण अथवा पिण्ड की स्थिति में समय के साथ परिवर्तन होना गति कहलाता है।
- कोई एक वस्तु एक व्यक्ति के लिए स्थिर अवस्था में तथा दूसरे व्यक्ति के लिए गति की अवस्था में हो सकती है।
- गति की अवस्था का मापन सदैव मूल बिंदू से किया जाता है।

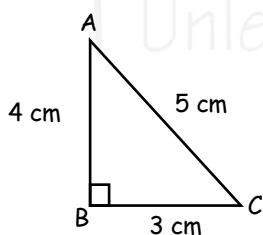


गति के प्रकार

- सरल रेखीय गति
उदाहरण – वाहनो का रोड़ पर चलना
- वृत्ताकार/वर्तुल गति
उदाहरण – वृत्त, इसमें वस्तु एक निश्चित वृत्ताकार पथ में गति करती है।
- दोलनी गति
उदाहरण – पेण्डुलम

विस्थापन

- प्रारंभिक बिंदु से अंतिम बिंदु की/के मध्य सरल रेखीय दूरी
- विस्थापन धनात्मक, ऋणात्मक तथा शून्य हो सकता है।
- इस आकृति के अनुसार तय की गई दूरी 7 cm है परन्तु विस्थापन 5 cm है।



चाल एवं वेग

कोई वस्तु एकांक समय में जितनी दूरी तय करती है, वह उसकी चाल है और कोई वस्तु एकांक समय में किसी निश्चित दिशा में जितनी दूरी तय करती है या विस्थापित होती है, उसे उस वस्तु का वेग कहते हैं। अतः

$$\text{चाल} = \frac{\text{दूरी}}{\text{समय}} \quad \text{वेग} = \frac{\text{विस्थापन}}{\text{समयांतराल}}$$

SI पद्धति में दोनों का मात्रक मीटर/सेकण्ड होता है।

चाल एवं वेग में अंतर

चाल	वेग
यह अदिश राशि है	यह सदिश राशि है
किसी भी वस्तु की चाल सर्वधनात्मक होती है।	किसी वस्तु का वेग धनात्मक, ऋणात्मक तथा शून्य हो सकता है।

त्वरण

यदि किसी वस्तु के वेग में समय के साथ परिवर्तन हो, तो इसके वेग-परिवर्तन की दर को इसका त्वरण (Acceleration) कहा जाता है तथा वस्तु की गति को त्वरित गति कहा जाता है।

$$\text{त्वरण} = \frac{\text{वेग परिवर्तन}}{\text{समयांतराल}}$$

त्वरण एकसमान या असमान हो सकते हैं। यह एक सदिश राशि है। इसका मात्रक मीटर/सेकण्ड² होता है अर्थात् यदि समय के किसी बिन्दु पर वस्तु का त्वरण समान हो, तो वह एकसमान त्वरण को व्यक्त करता है, लेकिन ऐसा नहीं है, तो त्वरण असमान हो सकता है।

एक समान गति से गतिशील वस्तु के लिए त्वरण का मान शून्य होता है। ऋणात्मक त्वरण, मन्दन (Retardation) कहलाता है।

एक समान त्वरण गति

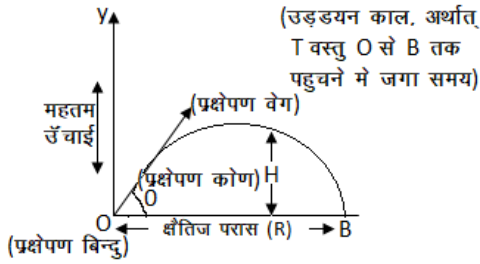
- एक समान त्वरण गति से आगे बढ़ रही वस्तु के बारे में व्याख्या निम्न समीकरणों के माध्यम से की जाती है।
 $v = u + at$
 $S = ut + \frac{1}{2} at^2$
 $v^2 = u^2 + 2aS$
 जहाँ u = प्रारम्भिक वेग
 v = अंतिम वेग
 $S = t$ समय में तय की गई दूरी
 a = त्वरण
- एक समान गति का तात्पर्य है कि वस्तु समान समय अंतराल में समान दूरी तय करती है।

प्रक्षेप्य गति

जब किसी पिण्ड को एक प्रारम्भिक वेग (प्रक्षेपण वेग) से, उर्ध्वाधर दिशा से भिन्न दिशा में फेंका जाता है, तो वह गुरुत्वीय त्वरण के अन्तर्गत उर्ध्वाधर तल में वक्र पथ पर गति करता है, जिसे प्रक्षेप्य गति (Projectile Motion) कहते हैं; जैसे- तोप से छूटे गोले की गति, ईंधन समाप्त होने पर रॉकेट की गति तथा हवाई जहाज से गिराए गए बम की गति आदि।

Note:

- प्रक्षेप्य को अधिकतम दूरी तक फेंकने के लिए उसे क्षैतिज से 45 डिग्री कोण पर ऊपर की ओर प्रक्षेपित करना चाहिए।
- प्रक्षेप्य कण के उच्चतम पिंड पर वेग एवं त्वरण के बीच 90° का कोण बनता है।
- यदि एक प्रक्षेपक का क्षैतिज परास उसकी अधिकतम ऊंचाई का चार गुना हैं तो प्रक्षेपण कोण का मान होगा— 45°



प्रक्षेप्य पथ

उसके अनुसार, उर्ध्वाधर दिशा से भिन्न दिशा में फेंका गया पिण्ड एक वक्र पथ पर गति करता है, जिसे प्रक्षेपण पथ (Projectile Path) कहते हैं। प्रक्षेप्य का पथ परवलयाकार होता है। प्रक्षेप्य का पथ तभी परवलयाकार होता है, जब तक कि इसका वेग बहुत अधिक न हो।

प्रक्षेप्य गति से सम्बन्धित उदाहरण

- एक गेंद को छत से नीचे गिराएँ तथा ठीक उसी समय दूसरी गेंद को क्षैतिज दिशा में फेंके, तो दोनों गेंदें पृथ्वी पर अलग-अलग स्थानों पर परन्तु एक साथ पहुँचेंगी।
- पेड़ पर बैठे बन्दर के ठीक सामने की ओर एक शिकारी निशाना लगाकर गोली छोड़ता है उसी समय बन्दर पेड़ से नीचे कूद जाए तो गोली बन्दर को ही लगती है। यदि बन्दर पेड़ पर ही बैठा रहे तो गोलीय गुरुत्व के कारण कुछ नीची होने के कारण बन्दर को नहीं लगती हैं।
- यदि किसी तोप से 5 किग्रा तथा 10 किग्रा के दो गोले समान वेग से एक ही दिशा में फेंके जाते हैं, तो दोनों पृथ्वी पर एक साथ पहुँचेंगे, क्योंकि गोलों के उड़ान का समय (उड़डयन काल) उनके द्रव्यमान पर निर्भर नहीं करता है।

न्यूटन की गति के नियम

1. गति का पहला नियम

- कोई वस्तु यदि आराम की अवस्था में है तो वह उसी अवस्था में रहती है और यदि वह गति की अवस्था में है। तो वह गतिशील ही रहती है जब तक कोई बाह्य बल उस पर आरोपित नहीं किया जाता है अर्थात् प्रत्येक वस्तु अपनी प्राथमिक स्थिति में ही रहना चाहती है।

- वस्तु द्वारा अपनी अवस्था में परिवर्तन के विरोध के गुण को जड़त्व कहते हैं।
- इसलिए इस नियम को जड़त्व का नियम भी कहते हैं। जड़त्व 2 प्रकार का होता है –
 - (1) आराम की अवस्था का जड़त्व
उदाहरण – गाड़ी के अचानक चलने पर उसमें बैठा व्यक्ति पीछे की ओर धक्का महसूस करता है। पेड़ को हिलाने पर फलों का नीचे गिरना इत्यादि।
 - (2) गति की अवस्था का जड़त्व
उदाहरण – लम्बी कूद में खिलाड़ी कूदने से पहले कुछ समय तक दौड़ता है।
चलती हुई गाड़ी में अचानक ब्रेक लगने पर यात्री आगे की ओर धक्का महसूस करता है।

- इसे 'गैलिलियो का नियम' भी कहते हैं।
- गति के पहले नियम से बल को परिभाषित किया जाता है।

2. गति का द्वितीय नियम

- किसी वस्तु के संवेग के परिवर्तन की दर उस पर आरोपित बल के समानुपाती होती है।
- संवेग की दिशा वस्तु पर आरोपित बल की दिशा के समान ही होती है।
- इसे आवेग संवेग का नियम भी कहते हैं।
- यह नियम हमें बल का सूत्र प्रदान करता है।
संवेग – किसी वस्तु के द्रव्यमान और उसके वेग का गुणनफल संवेग कहलाता है।
यह एक सदिश राशि है जिसे \vec{p} द्वारा दर्शाया जाता है।

$$\vec{p} = m\vec{v}$$

गति के दूसरे नियम के उदाहरण

- कैच लपकते समय खिलाड़ी द्वारा हाथों को पीछे की ओर ले जाना।
- खिलाड़ी यदि रेतीली और पानी की सतह पर गिरता है तो उसे कम चोट लगती है परन्तु सख्त पर गिरने से अधिक चोट लगती है।

3. गति का तृतीय नियम

यह नियम 2 वस्तुओं पर एक साथ लगने वाले पारस्परिक बल क्रिया व प्रतिक्रिया पर निर्भर है जो भिन्न-भिन्न वस्तुओं पर कार्य करते हैं।

उदाहरण

- रॉकेट प्रक्षेपण
- गोली/बंदूक : बंदूक से गोली चलने पर पीछे की तरफ झटका लगना।
- तैराक द्वारा हाथों व पैरों को पानी को पीछे छोड़ते हुए आगे बढ़ना।

बल

- बल वह भौतिक राशि है जो वस्तु की गति या आराम की अवस्था में परिवर्तन लाता है या परिवर्तन लाने का प्रयास करता है।
- यह एक सदिश राशि है जिसका मान वस्तु के द्रव्यमान और त्वरण के गुणनफल के बराबर होता है।
- किसी वस्तु पर लग रहे बल के बारे में पूर्ण जानकारी के लिए निम्न शर्तें आवश्यक हैं।
 - बल का परिमाण
 - बल के कार्य करने की दिशा
 - वह बिंदु जिस पर बल कार्य कर रहा है।



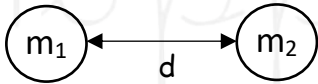
बल के मात्रक

- S. I. मात्रक = न्यूटन
- C.G.S. मात्रक = डाईन
- F.P.S. मात्रक = पाउण्डल

प्रकृति में चार मूल बल पाए जाते हैं –

1. गुरुत्वाकर्षण बल

- ब्रह्माण्ड में कोई 2 वस्तुओं के मध्य उनके द्रव्यमान के कारण उत्पन्न बल।
- यह बल वस्तुओं के मध्य की दूरी पर निर्भर करता है।
- यह प्रकृति में पाए जाने वाले सबसे कमजोर बलों में से है।



$$F \propto \frac{m_1 m_2}{d^2} \quad \Rightarrow \quad F = \frac{G m_1 m_2}{d^2}$$

जहाँ $G =$ गुरुत्वाकर्षण नियतांक
 $= 6.67 \times 10^{-11} \text{ Nm}^2 \text{ kg}^{-2}$

- इस बल के माध्यम से विभिन्न घटनाओं की व्याख्या की जाती है।
 - (1) हमें पृथ्वी से बाँधे रखने वाला बल
 - (2) चन्द्रमा का पृथ्वी के चारों ओर चक्कर लगाना
 - (3) पृथ्वी का सूर्य के चारों ओर चक्कर लगाना

2. दुर्बल नाभिकीय बल

- रेडियो सक्रिय पदार्थों से निकलने वाले α, β कणों के मध्य लगने वाला बल।

3. विद्युत चुम्बकीय बल

- यह बल दो आवेशों के मध्य लगता है।
- समान आवेश एक-दूसरे को विकर्षित तथा असमान आवेश एक दूसरे को आकर्षित करते हैं।
- इसे 'कूलाम का नियम' कहते हैं।
- यह बल गुरुत्वाकर्षण तथा दुर्बल नाभिकीय बल से अधिक होता है। (10^{36})

4. प्रबल नाभिकीय बल

- यह बल प्रोटॉन-प्रोटॉन तथा प्रोटॉन-न्यूट्रॉन के मध्य लगता है।
- इस बल के कारण ही नाभिक कभी टूटता नहीं है।
- यह प्रकृति में पाया जाने वाला सबसे शक्तिशाली बल है।

अभिकेन्द्र बल

जब कोई पिण्ड (वस्तु) किसी निश्चित बिन्दु के परितः वृत्तीय पथ पर अचर वेग से गति करता है तब वृत्तीय गति (Circular Motion) करती प्रत्येक वस्तु पर एक बल केन्द्र की ओर लगता है जिसे अभिकेन्द्र बल (Centripetal Force) कहते हैं।

- इस बल का मान $F = mv^2/r$ होता है।
- अधिकतर सड़के बाहर की तरफ से ऊँची उठी हुई रहती है जो इसी बल के सिद्धान्त पर आधारित है।

अभिकेद्री बल के उदाहरण

- इलेक्ट्रान का नाभिक के चारों ओर चक्कर लगाना।
- पृथ्वी का सूर्य के चारों ओर चक्कर लगाना
- वृत्तीय पक्ष में गतिमान वस्तु पर अभिकेद्री बल लगता है।

अपकेन्द्रीय बल (Centrifugal Force)

- जब वस्तु एक वृत्ताकार मार्ग में गति करती है तो उस पर बाहर की तरफ बल लगता है जिसे अपकेन्द्रीय बल कहते हैं। यह एक आभासी (छद्म) बल होता है।
- यह एक आभासी बल (Pseudo force) है। उदाहरण
 - Washing Machine में कपड़ों का साफ होना।
 - दूध से क्रीम अलग करने की मशीन इसी सिद्धान्त पर आधारित है।

ससंजक बल (Cohesive Force)

- एक ही पदार्थ के विभिन्न अणुओं के मध्य लगने वाला बल ससंजक बल कहलाता है।
- पृष्ठ तनाव इसी बल पर आधारित होता है।

आसंजक बल (Adhesive Force)

- विभिन्न पदार्थों के अणुओं के मध्य लगने वाला बल आसंजक बल कहलाता है।

घर्षण बल

- वह बल जो वस्तुओं के मध्य परस्पर गति का विरोध करता है।

- घर्षण बल सदैव गति की दिशा के विपरीत दिशा में लगता है।
- यह बल वस्तु की प्रकृति पर निर्भर करता है। चिकनी सतह पर वस्तुओं में घर्षण बल कम तथा खुरदरी सतह की वस्तुओं पर अधिक होता है।

घर्षण से लाभ व हानियाँ

लाभ

- घर्षण की अनुपस्थिति में पैदल चलना भी सम्भव नहीं है।
- धिरनियों (Pulleys), पट्टों (Belts), क्लचों (Clutches) तथा ब्रेको (Brakes), के संचालन के लिए घर्षण का विद्यमान होना परमावश्यक है।।
- घर्षण के कारण ही कील व पेंच (Nails And Screws) उन आवरण में जिनमें उनको कसा जाता है, स्थिर रह पाते हैं।
- यदि घर्षण न हो तो एक दीवार व फर्श के बीच एक सीढ़ी भी तिरछी नहीं खड़ी की जा सकती।
- घर्षण की अनुपस्थिति में पन्नों पर पेन की सहायता से लिखना भी सम्भव नहीं हो सकता।

हानियाँ

- घर्षण द्वारा दो वस्तुओं के मध्य सापेक्ष गति का विरोध होता है, जिस कारण अतिरिक्त उर्जा व्यय होती है।
- घर्षण के कारण मशीनों की दक्षता कम होती है, क्योंकि घर्षण के विरुद्ध कार्य करने में उर्जा का व्यय होता है।
- घूर्णन करने वाली मशीनों के पुर्जे घर्षण के कारण घिस जाते हैं तथा अधिक ध्वनि उत्पन्न करते हैं।

आवेग

किसी वस्तु पर आरोपित बल और उसके समय अंतराल के गुणनफल को आवेग कहते हैं।

- आवेग एक सदिश राशि है जिसका मात्रक न्यूटन-सेकण्ड या किग्रा-मी/सेकण्ड होता है
- आवेग और संवेग दोनों का मात्रक समान होता है।
- उदाहरण – चीनी मिट्टी के बर्तनों को कागज या घास-फूस में टुकड़ों में पैक करते हैं, जिससे गिरने की स्थिति में घास फूस के कारण आवेग, चीनी मिट्टी के बर्तनों तक पहुँचने में अधिक समय लगता है।
- रेलगाडी के डिब्बों की शंटिंग के दौरान गंभीर झटको से बचने के लिए Buffers (प्रतिरोधों) का प्रयोग किया जाता है, जिससे झटको के दौरान ढाल को ढाब कम हो जाता है।
- बल \propto संवेग में परिवर्तन की दर

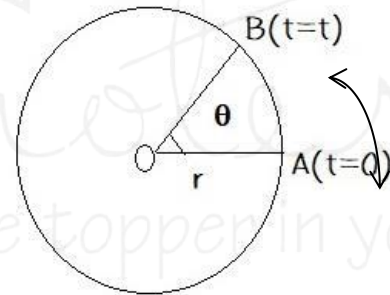
$$F = \frac{d(mv)}{dt} \Rightarrow \boxed{F = ma}$$

वृत्तीय गति (Circular Motion)

यदि कोई वस्तु वृत्तीय पथ पर एकसमान चाल से चलती है तो उसकी गति एक समान वृत्तीय गति कहलाती है। ऐसी वृत्तीय गति भी त्वरित होती है तथा त्वरण की दिशा सदैव वृत्त के केन्द्र की ओर होती है। वृत्तीय गति संबंधी कुछ पद निम्न प्रकार हैं –

1. आवर्तकाल (Time Period):- वृत्तीय गति में, कोई कण वृत्तीय पथ पर एक चक्कर पूरा करने में जितना समय लेता है, वह उस कण का आवर्तकाल कहलाता है। इसे T से प्रदर्शित करते हैं तथा इसका मात्रक सेकण्ड होता है।
2. आवृत्ति (Frequency):- वृत्तीय गति में कोई कण वृत्तीय पथ पर 1 सेकण्ड में जितने चक्कर लगाता है, वह कण की आवृत्ति कहलाती है। इसे ν से प्रदर्शित करते हैं, इसका मात्रक हर्ट्ज है।
3. कोणीय विस्थापन (Angular Displacement):- वस्तु के वृत्ताकार पथ के केन्द्र व वस्तु को मिलाने वाली रेखा द्वारा केन्द्र पर बनाए गए कोण को कोणीय विस्थापन कहते हैं। कोणीय विस्थापन का मात्रक रेडियन है व इसे $\Delta\theta$ से प्रदर्शित करते हैं।

अतः कोणीय विस्थापन = चाप / त्रिज्या



4. कोणीय वेग (Angular Velocity) :- वृत्तीय गति करते हुए कण के कोणीय विस्थापन के समय के साथ परिवर्तन की दर को कण का कोणीय वेग कहते हैं। इसे ω से प्रदर्शित करते हैं, इसका मात्रक रेडियन से है। अर्थात्

$$\omega = \frac{\text{कोणीय विस्थापन}}{\text{समयान्तराल}} = \frac{\Delta\theta}{\Delta t}$$

5. कोणीय त्वरण (Angular Acceleration) :- कोणीय वेग परिवर्तन की दर को कोणीय त्वरण कहते हैं। इसे (α) से प्रदर्शित करते हैं। इसका मात्रक रेडियन/से² होता है।

अतः कोणीय त्वरण = ω/t

6. अभिकेन्द्रीय त्वरण (Centripetal Acceleration) :- जब कोई वस्तु एकसमान वृत्तीय गति करती है, तो उसकी

चाल तो नियत रहती है, परन्तु उसकी दिशा लगातार बदलती रहती है अर्थात् वस्तु का वेग बदलता रहता है अर्थात् एकसमान वृत्तीय गति में त्वरण होता है, इस त्वरण को ही अभिकेन्द्रीय त्वरण कहते हैं।

$$\text{अभिकेन्द्रीय त्वरण} = a = \frac{v^2}{r} \text{ या } \omega = r\omega^2$$

यहाँ r = वृत्तीय पथ की त्रिज्या,
 v = वस्तु का रेखीय वेग तथा
 ω = वस्तु का कोणीय वेग

संवेग संरक्षण का सिद्धांत (Law of Conservation of Momentum)

न्यूटन की गति के द्वितीय और तृतीय दोनों नियमों के सम्मिलित प्रभावों से संवेग संरक्षण के नियम की प्राप्ति होती है। इसके अनुसार, "यदि कणों के किसी समूह या निकाय पर बाह्य बल न लग रहा हो तो, उस निकाय का कुल संवेग नियत रहता है।"

संवेग संरक्षण के नियम के उदाहरण

- रॉकेट प्रणोदन :- रॉकेट का उड़ना क्रिया-प्रतिक्रिया एवं संवेग संरक्षण के सिद्धान्तों पर आधारित है। रॉकेट का ईंधन जब जलता है तो तीव्र गति से गैसीय निकास होता है, जो प्रतिक्रिया स्वरूप रॉकेट को ऊपर धकेलता है।
- रॉकेट ईंधन का नियत वेग से दहन होने पर संवेग परिवर्तन की दर भी नियत रहती है, पर जैसे-जैसे रॉकेट उड़ता है उसमें ईंधन का दहन होने से रॉकेट का द्रव्यमान कम हो जाता है, जिसके कारण संवेग संरक्षण के नियमानुसार रॉकेट के वेग व त्वरण में वृद्धि होती है।
- संवेग संरक्षण के कारण ही जब कोई व्यक्ति नाव से कूदता है तो नाव पीछे खिसकती है।

गुरुत्वाकर्षण

न्यूटन का गुरुत्वाकर्षण का नियम

इस नियम के अनुसार, किन्हीं दो पिण्डों के मध्य कार्य करने वाला बल उनके द्रव्यमानों के गुणनफल के अनुक्रमानुपाती तथा उनके बीच की दूरी के वर्ग के व्युत्क्रमानुपाती होता है। अर्थात्

$$\text{बल, } F = \frac{m_1 m_2}{r^2} ; \mathbf{k} F = G \frac{m_1 m_2}{r^2}$$

जहाँ m_1 तथा m_2 पिण्डों के द्रव्यमान, r पिण्डों के बीच की दूरी तथा G एक सार्वत्रिक गुरुत्वाकर्षण नियतांक (Universal Gravitational Constant) हैं, जिसका S.I. मान 6.67×10^{-11} न्यूटन-मी²/किग्रा² होता है।

गुरुत्व

पृथ्वी एवं अन्य किसी पिण्ड के बीच लगने वाले बल को गुरुत्व बल तथा इस घटना को गुरुत्वाकर्षण (Gravity) कहते हैं अर्थात् गुरुत्व वह आकर्षण बल है जिससे पृथ्वी किसी वस्तु को अपने केन्द्र की ओर खींचती है।

गुरुत्वीय त्वरण

गुरुत्व बल के कारण किसी पिण्ड में उत्पन्न त्वरण गुरुत्वीय त्वरण (Acceleration due to Gravity) कहलाता है। इसे g से प्रदर्शित करते हैं। इसका मात्रक मी/से² या न्यूटन/किग्रा होता है।

$$g = G \frac{M_e}{R_e^2}$$

पृथ्वी की सतह पर गुरुत्वीय त्वरण,

जहाँ, G = गुरुत्वाकर्षण नियतांक

M_e = पृथ्वी का द्रव्यमान

R_e = पृथ्वी की त्रिज्या

अतः स्पष्ट है कि g का मान पिण्ड या वस्तु के द्रव्यमान पर निर्भर नहीं करता है।

- पृथ्वी तल से नीचे जाने पर g का मान घटता है। ध्रुवों पर g का मान अधिकतम तथा विशुवत् रेखा पर न्यूनतम होता है।
- पृथ्वी के केन्द्र पर g का मान शून्य होता है। अतः किसी वस्तु का भार पृथ्वी के केन्द्र पर शून्य होता है, लेकिन द्रव्यमान नियत रहता है।
- यदि समान द्रव्यमान की दो वस्तुओं को मुक्त रूप से उपर से गिराया जाए, तो उनमें उत्पन्न त्वरण समान होगा।
- G का प्रमाणिक मान 45° अक्षांश (Latitude) तथा समुद्र तल पर 9.8 मी/से² होता है। यदि पृथ्वी अपने अक्ष के चारों ओर घूमना बन्द कर दे, तो ध्रुवों के अतिरिक्त प्रत्येक स्थान पर g के मान में वृद्धि हो जाएगी। यह विशुवत् रेखा पर सर्वाधिक तथा ध्रुवों पर सबसे कम होगी।

Note :-

- भूमध्य रेखा पर g का मान – न्यूनतम
- ध्रुवों पर g का मान – अधिकतम
- भूमध्य रेखा से ध्रुवों की ओर जाने पर गुरुत्वीय त्वरण का मान बढ़ता जाता है क्योंकि भूमध्य रेखा पर पृथ्वी की त्रिज्या ध्रुवों की त्रिज्या से लगभग 21 किलोमीटर अधिक है। जैसे-जैसे हम ध्रुवों की ओर जाने हैं वैसे-वैसे R_e का मान कम होता जाता है और गुरुत्वीय त्वरण का मान बढ़ता जाता है।

- पृथ्वी अपने अक्ष पर घूमना बंद कर दे ($w = 0$) तो ध्रुवों के अतिरिक्त प्रत्येक स्थान पर g के मान में वृद्धि होगी। यदि वृद्धि विशुद्ध रेखा पर सर्वाधिक तथा ध्रुवों की ओर जाने पर कम होती जाएगी।
- पृथ्वी अपने अक्ष के परितः तेजी से घूमने लग जाए तो पृथ्वी के कोणीय वेग बढ़ने के कारण g का मान घट जाएगा।

द्रव्यमान व भार

- किसी वस्तु का द्रव्यमान उसके जड़त्व का माप होता है, किसी वस्तु का जड़त्व उतना ही होगा, जितना उसका द्रव्यमान।
- जिस बल द्वारा पृथ्वी किसी वस्तु को अपने केन्द्र की ओर खींचती है, उस बल को उस वस्तु को भार कहते हैं। भार का SI मात्रक = न्यूटन। $W = Mg$ $W =$ भार, $M =$ द्रव्यमान, $g =$ गुरुत्वीय त्वरण
- वस्तु का द्रव्यमान स्थिर रहता है अर्थात् वस्तु चाहे पृथ्वी पर हो या चंद्रमा पर या बाह्य अंतरिक्ष में। अर्थात् वस्तु का द्रव्यमान एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाने पर नहीं बदलता है।
- वस्तु का भार उसके द्रव्यमान तथा गुरुत्वीय त्वरण पर निर्भर करता है और किसी भी राशि पर नहीं।

भारहीनता

- भारहीनता की स्थिति में, वस्तु का प्रभावी भार शून्य होता है।
- यदि नीचे उतरते समय लिफ्ट की डोरी टूट जाए, तब लिफ्ट में रखे व्यक्तियों को अथवा कृत्रिम उपग्रह के भीतर बैठे अंतरिक्ष यात्री को भारहीनता का अनुभव होता है।

पलायन वेग

वह न्यूनतम वेग, जिससे किसी पिण्ड को ऊपर की ओर फेंका जाय और वह पृथ्वी के गुरुत्वीय क्षेत्र को पार कर जाय तथा वापस पृथ्वी पर लौटकर न आये, पलायन वेग कहलाता है। इसका मान पृथ्वी पर 11.2 किमी/सेकण्ड है।

ग्रहों, उपग्रहों में वायुमण्डल की उपस्थिति, किसी ग्रह या उपग्रह पर वायुमण्डल का होना या न होना, वहाँ पर पलायन वेग के मान पर निर्भर करता है। यदि पलायन वेग का मान बहुत अधिक है तो बहुत सघन वायुमण्डल होगा और यदि पलायन वेग कम है तो वायुमण्डल विरल होगा।

कार्य

- किसी वस्तु पर आरोपित बल एवं उसके कारण हुए विस्थापन को कार्य कहते हैं।
- कार्य एक अदिश राशि है।

$$W = F \cdot s \quad (F = \text{बल}, S = \text{विस्थापन})$$

- कार्य धनात्मक, ऋणात्मक तथा शून्य हो सकता है।
- कार्य का मात्रक
 - S.I. मात्रक = जूल
 - C.G.S. मात्रक = अर्ग
- यदि किसी वस्तु पर 1N का बल लगाया जाए और उस विस्थापन हो तो किए गए कार्य की मात्रा 1 Joule होती।

 $1 \text{ Joule} = 10^7 \text{ Erg}$

कार्य के प्रकार (Types of Work)

कार्य मुख्यतः तीन प्रकार के होते हैं

1. धनात्मक कार्य (Positive Work)

जब बल तथा विस्थापन एक ही दिशा में होता है, तब बल द्वारा किया गया कार्य धनात्मक होगा। धनात्मक कार्य का अर्थ है कि बाह्य बल, निकाय या वस्तु को ऊर्जा प्रदान करते हैं।

उदाहरण : यदि कोई व्यक्ति किसी पिण्ड को पृथ्वी की सतह से ऊपर उठाता है, तो उसके द्वारा किया गया कार्य धनात्मक होगा।

2. ऋणात्मक कार्य (Negative Work)

जब बल तथा विस्थापन विपरीत दिशा में होते हैं, तब बल द्वारा किया गया कार्य ऋणात्मक होगा। ऋणात्मक कार्य का अर्थ है कि बल निकाय से ऊर्जा लेता है।

उदाहरण : यदि कोई व्यक्ति किसी पिण्ड को पृथ्वी की सतह से ऊपर उठाता है तो गुरुत्वीय बल द्वारा किया गया कार्य ऋणात्मक होगा।

3. शून्य कार्य (Zero Work)

जब बल तथा विस्थापन लम्बवत् दिशा में होते हैं, तब बल द्वारा किया गया कार्य शून्य होगा।

उदाहरण :

- यदि कोई कुली सिर पर बोझ उठाकर प्लेटफॉर्म पर चल रहा है, तो यह कोई कार्य नहीं करता (क्योंकि उसका कार्य गुरुत्व बल के लम्बवत् है)। जब वस्तु का विस्थापन, लगाए गए बल की दिशा में होता है, तो किया गया कार्य अधिकतम होगा। यदि वस्तु का विस्थापन शून्य है, तो वस्तु पर लगा बल कोई कार्य नहीं करेगा; जैसे सिर पर बोझा लिए खड़ा मजदूर कोई कार्य नहीं करता, चाहे वह खड़ा-खड़ा थक ही क्यों न जाए।

शक्ति

किसी मशीन अथवा किसी कर्ता के द्वारा कार्य करने की दर को उसकी शक्ति या सामर्थ्य (Power) कहते हैं अर्थात्

$$\text{सामर्थ्य} = \frac{\text{कार्य}}{\text{समय}} \quad \text{या} \quad P = \frac{W}{t}$$

शक्ति को जूल/सेकण्ड या वाट में मापते हैं।

शक्ति का व्यावहारिक मात्रक अश्व शक्ति (Horse Power या HP) है तथा 1 HP = 746 Watts।

साधारण मनुष्य की सामर्थ्य 0.05 HP से 0.1 HP होती है।

- विद्युत ऊर्जा का वाणिज्यिक मात्रक = KWh
- यदि 1000 watt के किसी भी उपकरण को 1 hour तक जाए तो इसमें खपत हुई ऊर्जा को 1 unit के बराबर माना।

ऊर्जा

- किसी वस्तु द्वारा कार्य करने की क्षमता की 'ऊर्जा' कहते हैं।
- ऊर्जा एक अदिश राशि है जिसका मात्रक कार्य के गणक के समान ही होते हैं।
- कार्य की तरह ऊर्जा भी अदिश राशि है व इसका मात्रक जूल है।
- कैलोरी ऊर्जा का एक बड़ा मात्रक है।
1 कैलोरी = 4.18 जूल

ऊर्जा दो प्रकार की होती है :-

गतिज ऊर्जा

- वस्तु में गति के कारण जो ऊर्जा होती है उसे गतिज ऊर्जा कहते हैं।
गतिज ऊर्जा हमेशा 'धनात्मक' होती है।
 $KE = \frac{1}{2}MV^2$ $KE = \text{गतिज ऊर्जा}$
 $M = \text{द्रव्यमान}$ $V = \text{वेग}$
- बहती हुई हवा में 'गतिज ऊर्जा' होती है।

स्थितिज ऊर्जा (KE)

- वस्तु में उसकी अवस्था या स्थिति या विकृति के कारण संचित ऊर्जा स्थितिज ऊर्जा कहलाती है।
- $PE = mgh$ $m = \text{द्रव्यमान}$
 $g = \text{गुरुत्वाकर्षण}$ $h = \text{ऊँचाई।}$
- खींचे हुई गुलेल एवं घड़ी की चाली में संचित ऊर्जा स्थितिज ऊर्जा होती है।
- यांत्रिक ऊर्जा = गतिज ऊर्जा + स्थितिज ऊर्जा

ऊर्जा संरक्षण का नियम (Law of Conservation of Energy)

इस नियम के अनुसार, ऊर्जा को न तो उत्पन्न किया जा सकता है और न ही नष्ट परन्तु ऊर्जा को एक रूप से दूसरे रूप में बदला जा सकता है इसे ऊर्जा संरक्षण का नियम कहते हैं। विश्व की सम्पूर्ण ऊर्जा का परिमाण सदैव स्थित (Conserved) रहता है।

उदाहरण

- जब एक वस्तु को ऊँचाई से गिराया जाता है, तो वस्तु की स्थितिज ऊर्जा लगातार गतिज ऊर्जा में बदलती रहती है।
- जब एक वस्तु को ऊर्ध्वाधर (ऊपर की ओर) फेंका जाता है, तो वस्तु की गतिज ऊर्जा लगातार स्थितिज ऊर्जा में बदलती रहती है।
अतः रूपांतरण (Transformation) से पहले या बाद में कुल ऊर्जा सदैव स्थिर रहती है।

अर्थात् किसी पिण्ड की कुल ऊर्जा (गतिज ऊर्जा तथा स्थितिज ऊर्जा का योग) सदैव नियतांक होता है।

ऊर्जा का रूपांतरण

ऊर्जा का एक या अधिक प्रकार में रूपांतरण होता रहता है। ऊर्जा को एक रूप से अन्य में, विभिन्न उपकरणों की सहायता से परिवर्तित किया जा सकता है।

- विद्युत ऊर्जा से प्रकाश एवं ऊष्मा – विद्युत बल्ब
- रासायनिक ऊर्जा से विद्युत ऊर्जा – विद्युत सेल
- यांत्रिक ऊर्जा से विद्युत ऊर्जा – डायनमो
- स्थितिज ऊर्जा से विद्युत ऊर्जा – टरबाइन (जल विद्युत उत्पादन में)
- विद्युत ऊर्जा से यांत्रिक ऊर्जा – मोटर
- ऊष्मा से यांत्रिक ऊर्जा – इंजन
- नाभिकीय ऊर्जा से ऊष्मीय ऊर्जा, ऊष्मीय ऊर्जा से यांत्रिकी ऊर्जा एवं यांत्रिकी ऊर्जा से विद्युत ऊर्जा – परमाणु विद्युत गृह।
- विद्युत ऊर्जा से ध्वनि ऊर्जा – स्पीकर
- विद्युत ऊर्जा से विद्युत चुंबकीय ऊर्जा – ट्रांसमीटर

आवर्त गति एवं तरंग

आवर्त गति

जब कोई पिण्ड एक निश्चित समयान्तराल में एक ही निश्चित पथ पर बार-बार अपनी गति को दोहराता है, तो उसकी गति आवर्त (Periodic Motion) गति कहलाती है; जैसे- पृथ्वी सूर्य के चारों ओर चक्कर लगाती है, तो पृथ्वी की वह गति आवर्त गति है।

विभिन्न प्रकार की तरंगों का वर्गीकरण

वर्गीकरण का आधार	तरंगों के प्रकार	मुख्य विशेषता	उदाहरण
माध्यम	<ul style="list-style-type: none"> यान्त्रिक या प्रत्यास्थ तरंगों। वैद्युत चुम्बकीय या अप्रत्यास्थ तरंगों। 	<ul style="list-style-type: none"> माध्यम आवश्यक। माध्यम आवश्यक नहीं। 	<ul style="list-style-type: none"> ध्वनि तरंगें, भूकम्प तरंगें X-किरणें,
कम्पन	<ul style="list-style-type: none"> अनुदैर्घ्य तरंगें। अनुप्रस्थ तरंगें। 	<ul style="list-style-type: none"> तरंग संचरण के अनुदिश कम्पन। तरंग संचरण के लम्बवत् कम्पन। 	<ul style="list-style-type: none"> ध्वनि तरंगें। रस्सी में उत्पन्न तरंगें
तरंग संचरण के बिना	<ul style="list-style-type: none"> एकविमीय तरंगें। द्वि-विमीय तरंगें। त्रिविमीय तरंगें। 	<ul style="list-style-type: none"> एक अक्ष के अनुदिश गतिमान। एक तल पर गतिमान सभी दिशाओं में गतिमान। 	<ul style="list-style-type: none"> तनी हुई रस्सी में उत्पन्न तरंगें जल की सतह पर उत्पन्न तरंगें निर्वात में संचरित प्रकाश तरंगें

(a) यांत्रिक तरंग (Mechanical Wave)

यांत्रिक तरंगें वे तरंगें होती हैं जिन्हें एक स्थान से दूसरे स्थान तक जाने के लिए एक माध्यम की जरूरत पड़ती है जैसे हवा पानी कांच आदि यह निर्वात में नहीं जा सकती है। यांत्रिक तरंग कंपन के द्वारा उत्पन्न होती हैं जल तरंगें, ध्वनि तरंग आदि यांत्रिक तरंगें हैं। ये दो प्रकार की होती हैं—

(i) अनुप्रस्थ तरंग (Transverse Wave) —

जब संचरण शील कण, माध्यम में तरंग के चलने की दिशा के लम्बवत् कम्पन करते हैं तो तरंग अनुप्रस्थ होती है। ये तरंग ठोस में एवं जल के उपरी सतह पर उत्पन्न होती है। जल के भीतर एवं गैसों में उत्पन्न नहीं होती है।

उदाहरण : सितार के तार की तरंग

(ii) अनुदैर्घ्य तरंग (Longitudinal Wave) —

जब माध्यम में संचरणशील कण, तरंग के संचरण की दिशा के समानान्तर कम्पन करते हैं तो तरंग

अनुदैर्घ्य होती है। ये तरंगें सभी माध्यमों (ठोस, द्रव, गैस) में उत्पन्न की जा सकती है। ये तरंगें संपीडन (Compression) व विरलन (Rarefaction) के रूप में संचरित होती है।

भूकम्पी तरंगें, स्प्रिंग में उत्पन्न तरंगें आदि अनुदैर्घ्य तरंगें हैं। एक संपीडन के बीच की दूरी अथवा एक विरलन से दूसरे विरलन के बीच की दूरी अनुदैर्घ्य तरंग की तरंग दैर्घ्य कहलाती है।

उदाहरण : गैस में उत्पन्न तरंगें— अनुदैर्घ्य तरंगें

(b) विद्युत चुम्बकीय तरंगें (Electromagnetic Wave)

ये चुम्बकीय एवं विद्युत क्षेत्रों के दोलन से उत्पन्न होने वाली अनुप्रस्थ तरंगें हैं। समप्रकाश, ऊष्मीय विकिरण, एक्स किरणें, रेडियो किरणें आदि इसके उदाहरण हैं। सभी विद्युत चुम्बकीय तरंगें एक ही चाल से चलती हैं तथा इनकी चाल प्रकाश की चाल के बराबर तीन लाख किमी प्रति सेकेंड होता है।

विद्युत चुम्बकीय तरंगें	खोजकर्ता	उपयोग
गामा किरणें	बैकुरल	इसकी भेदन क्षमता अत्यधिक होती है, इसका उपयोग नाभिकीय अभिक्रिया तथा कृत्रिम रेडियोधर्मिता में की जाती है।
एक्स किरणें	रॉन्टजन	चिकित्सा एवं औद्योगिक क्षेत्र में।
पराबैंगनी किरणें	रिटर	अदृश्य लिखावट को देखने, अंगुली के निशानों का पता लगाने में, नकली करेन्सी का पता लगाने में, प्रकाश वैद्युत प्रभाव को उत्पन्न करने, बैकटीरिया को नष्ट करने में
दृश्य किरणें	न्यूटन	इसमें हमें वस्तुएँ दिखाई पड़ती है।
अवरक्त विकिरण	हरशैल	ये किरणें ऊष्मीय विकिरण हैं। ये जिस वस्तु पर पड़ती हैं, उसका ताप बढ़ जाता है। इसका उपयोग कहरें में फोटोग्राफी करने, रोगियों की सेकाई करने में, टीवी के रिमोट कंट्रोल में किया जाता है।
लघु रेडियो तरंगें या हाटर्ज तरंगें	हेनरिक हर्ट्ज	रेडियो, टेलिविजन एवं टेलिफोन में इसका उपयोग किया जाता है।
दीर्घ रेडियो तरंगें	मारकोनी	रेडियो एवं टेलिविजन में उपयोग होता है।

(c) ध्वनि तरंगे (Sound Waves)

ये अनुदैर्घ्य यांत्रिक तरंगे हैं ये विभिन्न आवृत्तियों की होती हैं। जिनकी आवृत्ति 20 हर्ट्ज से 20000 हर्ट्ज के बीच हो। जिनकी अनुभूति व्यक्ति के कानों द्वारा हो उसे ध्वनि कहते हैं। ध्वनि तरंगे दोलन कर रहे किसी स्रोत से उत्पन्न होकर, वायु से गुजरती हुई व्यक्ति के कानों तक पहुँचकर कान के पर्दे को दोलित कर देती हैं और ध्वनि सुनाई देने लगती हैं। ध्वनि तरंगों को आवृत्ति व परिसर के अनुसार तीन भागों में बांटा जाता है।

(i) श्रव्य तरंगे (Audible Waves) –

वे यांत्रिक तरंगे जिनकी आवृत्ति परिसर 20 से लेकर 20000 हर्ट्ज तक होता है श्रव्य तरंगे कहलाती हैं।

(ii) अवश्रव्य तरंगे (Infrasonic Waves)

वे यांत्रिक तरंगे जिनकी आवृत्ति 20 हर्ट्ज से कम होती है ये मनुष्य को सुनाई नहीं देती हैं। ये भूकम्प के समय पृथ्वी के अन्दर एवं हृदय की धड़कन से उत्पन्न होती हैं।

(iii) पराश्रव्य तरंगे (Ultrasonic Waves)

वे अनुदैर्घ्य यांत्रिक तरंगे जिनकी आवृत्ति 20000 हर्ट्ज से अधिक होती है। मनुष्य के कान इनको नहीं सुन सकते कुत्ता, बिल्ली, चमगादड़, डालफिन आदि इनको सुन सकते हैं। इनमें अत्यधिक मात्रा में ऊर्जा संचित होने से इनका उपयोग ट्यूमर पता करने, दाँत निकालने आदि के अतिरिक्त जीवों की कोशिकाओं को नष्ट करने, तांत्रिक व गठिया रोगों के इलाज में, हवाई अड्डों पर धुंध को हटाने, कपड़ों की धुलाई, घड़ी तथा विमानों के आन्तरिक कल – पुर्जों की सफाई में समुद्र की गहराई, अन्दर की बड़ी बड़ी चट्टानों, हिमशैलों, मछलियों का पता लगाने में किया जाता है।

ध्वनि का परावर्तन (Reflection of Sound)

ध्वनि भी प्रकाश की तरह परावर्तित होती है ध्वनि की तरंग दैर्घ्य अधिक होने के कारण इसका परावर्तन बड़े पृष्ठों से ही होता है। कुआँ, पहाड़, नदी, घाटी, दीवार आदि से ध्वनि परिवर्तित हो जाती है।

ध्वनि का अपवर्तन (Refraction of Sound)

प्रकाश की भाँति ध्वनि तरंगें भी माध्यम के परिवर्तन से अपवर्तित हो जाती हैं। ध्वनि तरंगों का अपवर्तन वायु की भिन्न भिन्न पर्तों का ताप भिन्न होने के कारण होता है गर्म वायु में ध्वनि की चाल ठण्डी वायु की अपेक्षा अधिक होती है। अतः ध्वनि तरंगें जब गर्म वायु से ठण्डी में या ठण्डी वायु से गर्म वायु में प्रवेश करती हैं तो अपने मार्ग से विचलित हो जाती हैं। दिन के समय गर्मी के कारण पृथ्वी के समीप की वायु उपर की अपेक्षा अधिक गर्म होती है, जिससे किसी स्रोत से उत्पन्न ध्वनि दूर तक नहीं सुनाई देती। इसके विपरीत रात्रि के समय ध्वनि दूर तक सुनाई देती है क्योंकि पृथ्वी के आस पास के बजाय उपरी परत का ताप अधिक होता है।

ध्वनि का व्यतिकरण (Interference of Sound)

- दो समान आवृत्ति व आयाम की दो ध्वनि तरंगें एक साथ किसी बिन्दु पर पहुँचती हैं तो उस बिन्दु पर ध्वनि उर्जा का पुनर्वितरण हो जाता है। इसे ही ध्वनि का व्यतिकरण कहते हैं।
- यदि दोनों तरंगें एक ही कला (Phase) में पहुँचती हैं तो परिणामी आयाम दोनों तरंगों के योग के बराबर होने से ध्वनि तीव्र होगी इसे संपाती व्यतिकरण कहते हैं।
- यदि दोनों तरंगें विपरीत कला में मिलती हैं तो व्यतिकरण विनाशी होगा व ध्वनि की तीव्रता न्यूनतम होगी।
- समुद्र में नीरव क्षेत्र (Silence Zone) विनाशी व्यतिकरण के कारण होता है
- रेडियो स्टेशन का प्रसारण कभी-कभी साफ सुनाई नहीं देता यह भी विनाशी व्यतिकरण के कारण होता है।

ध्वनि प्रदूषण

- पर्यावरण में अवांछित ध्वनियों को ही ध्वनि प्रदूषण कहते हैं।
- ध्वनियों की तीव्रता 90-95 डेसीबल से लेकर 140-150 डेसीबल के मध्य हो सकती है।
- WHO के द्वारा नगर के लिए निर्धारित किया गया सुरक्षित ध्वनि प्रदूषण 45 डेसीबल है।
- 80 डेसीबल से अधिक तीव्रता वाला हानिकारक ध्वनि, प्रदूषक कहलाती है।

प्रतिदीप्ति (Fluorescence)

कुछ पदार्थ जब उच्च आवृत्ति वाले प्रकाश (नीला या अल्ट्रावायलेट) द्वारा प्रदीप्त किये जाते हैं तो वे अपेक्षाकृत कम आवृत्ति का प्रकाश उत्सर्जित करते हैं। यह उत्सर्जन तब तक होता है जब तक पदार्थ को प्रदीप्त किया जाता है। इस परिघटना को प्रतिदीप्ति कहते हैं।

अनुप्रयोग

- प्रतिदीप्ति प्रभाव के कारण अल्ट्रावायलेट किरणों का पता लगाया जा सकता है।
- X – किरणें तथा अल्ट्रावायलेट किरणें बेरियम प्लेटिनो सायनाइड पर प्रतिदीप्ति उत्पन्न करती हैं।
- सड़क किनारे लगाने वाले निर्देशक बोर्डों को सामान्यतः प्रतिदीप्ति पेंट से पेंट किया जाता है जिससे रात (अंधेरे) में रोशनी पडने पर ये चमकीले दिख सकें।

स्फुरदीप्ति (Phosphorescence)

कुछ पदार्थ ऐसे होते हैं जो प्रकाश स्रोत हटाने पर भी उसके बाद कुछ देर तक प्रकाश का उत्सर्जन करते रहते हैं। इस परिघटना को स्फुरदीप्ति कहते हैं। घड़ी की सुईयाँ, साइन बोर्ड, बिजली के बोर्ड आदि पर स्फुरदीप्ति करते हैं तथा ये रात में स्फुरदीप्ति के कारण चमकते हैं।

अनुनाद (Resonance)

किसी मुक्त दोलन करने वाली वस्तु पर कोई बाह्य आवर्त बल लगाने पर वस्तु दोलनों के अन्तर्गत दोलन करती है लेकिन यदि बाह्य आवर्त वस्तु की अपनी स्वाभाविक आवृत्ति के बराबर हो तो इस दशा में दोलनों का आयाम बहुत अधिक बढ़ जाता है, इसी अवस्था को अनुनाद कहते हैं।

उदाहरण

सेना का पुल पार करते समय मार्च पास्ट न करने की सलाह, गायक के स्वर से खिडकी का टूटना, बस की खडखडाहट आदि।

अनुरणन (Reverberation)

किसी हॉल में ध्वनि स्रोत के बन्द करने के बाद भी ध्वनि का कुछ देर तक सुनाई देना 'अनुरणन' या अनुगूँज कहलाता है। जितने समय तक यह ध्वनि सुनाई देती है उसे अनुरणन काल कहते हैं। किसी हॉल का अनुरणन काल यदि .8 सेकेण्ड से अधिक है तो वक्ता द्वारा दिया गया भाषण सुनाई नहीं देगा। अनुरणन काल शून्य वाले हाल को गूँजहीन हाल (Dead Hall) कहते हैं। अनुरणन रोकने हेतु हॉल की दीवारें खुरदरी एवं मोटे पर्दों से ढक दी जाती है। अनुरणन शून्य होने पर आवाज बहुत धीमी सुनाई देगी।

प्रतिध्वनि (Echo)

किसी परावर्तक तल से वापस लौटकर सुनाई देने वाली ध्वनि को प्रतिध्वनि कहते हैं। यदि स्रोत परावर्तक तल के समीप स्थित होगा तो प्रतिध्वनि नहीं सुनाई देगी। प्रतिध्वनि सुनने के लिए न्यूनतम 16.6 मी. (लगभग 17 मी) की दूरी ध्वनि स्रोत व परावर्तक तल के बीच होनी चाहिए। कोई ध्वनि हमारे कानों में .1 सेकेण्ड तक रहती है। अतः प्रति ध्वनि सुनने के लिए आवश्यक है कि ध्वनि .1 सेकेण्ड बाद हमारे कानों तक पहुँचे। चन्द्रमा पर प्रतिध्वनि नहीं सुनाई देगी प्रतिध्वनि का कारण है - ध्वनि का परावर्तन होना।

डॉप्लर प्रभाव

जब ध्वनि स्रोत एवं श्रोता के बीच आपेक्षित गति होती है, तो श्रोता को ध्वनि की आवृत्ति बदलती हुई प्रतीत होती है। इसी प्रभाव को डॉप्लर प्रभाव (Doppler's Effect) कहते हैं। इसमें तीन स्थितियाँ सम्भव हैं

- (i) जब आपेक्षिक गति के कारण स्रोत एवं श्रोता के बीच की दूरी घट रही होती है, तो आवृत्ति (आभासी) बढ़ती हुई प्रतीत होती है।
- (ii) जब आपेक्षिक गति से स्रोत तथा श्रोता के बीच की दूरी बढ़ रही होती है, तो आवृत्ति (आभासी) घटती हुई प्रतीत होती है।
- (iii) जब स्रोत एवं श्रोता के बीच की दूरी नियत रहती है, तो डॉप्लर प्रभाव शून्य रहता है। ध्वनि तरंगों के लिए आभासी आवृत्ति

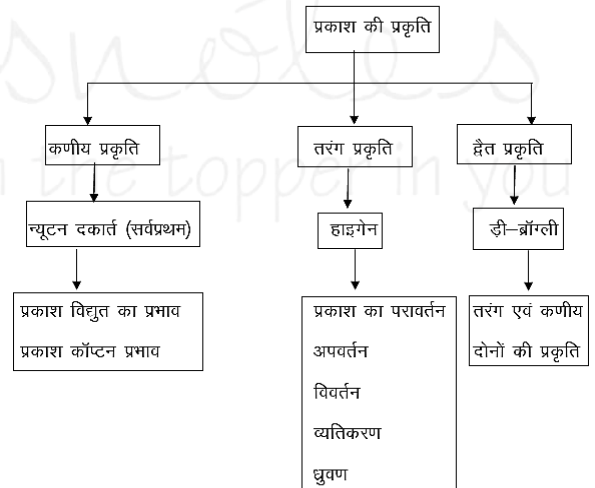
$$\frac{\text{प्रेक्षक के सापेक्ष ध्वनि का वेग}}{\text{स्रोत के सापेक्ष ध्वनि का वेग}} = \text{वास्तविक आवृत्ति}$$

प्रकाश

प्रकाश उर्जा का ही एक ऐसा रूप है जो नेत्र की रेटिना को उत्तेजित करके हमें दृष्टि संवेदनशील बनाता है तथा इसी के कारण हम वस्तुओं को देख पाते हैं। प्रकाश, विद्युत चुम्बकीय तरंगें हैं तथा इनसे प्राप्त विद्युत चुम्बकीय स्पेक्ट्रम का एक सूक्ष्म भाग (4000Å-7800Å) ही मानव नेत्र को वस्तुएँ दिखाने में सहायक होता है, जिसे दृश्य प्रकाश कहते हैं। भौतिक विज्ञान की जिस शाखा के अन्तर्गत प्रकाश के गुणों का विस्तृत अध्ययन किया जाता है, प्रकाशिकी (Optics) कहलाती है।

प्रकाश की चाल

विभिन्न माध्यमों में प्रकाश की चाल भिन्न-भिन्न होती है। निर्वात या वायु में प्रकाश की चाल (Speed of Light) सर्वाधिक अर्थात् 3×10^8 मी./से होती है, जो माध्यम जितना अधिक सघन होता है उसमें प्रकाश की चाल उतनी ही कम होती है। प्रकाश की किसी माध्यम में चाल, $u = \frac{c}{\mu}$ होती है, जहाँ $c = 3 \times 10^8$ मी./से तथा μ माध्यम का अपवर्तनांक (Refractive Index) है। प्रकाश के वेग की गणना सर्वप्रथम रोमर ने की। सूर्य के प्रकाश को पृथ्वी तक पहुँचने में औसतन 8 मिनट 16.6 सेकेण्ड का समय लगता है। चन्द्रमा से परावर्तित प्रकाश को पृथ्वी तक आने में 1.28 सेकेण्ड का समय लगता है।



दर्पण

- Polish (कलई) करने के लिए $AgNO_3$ (सिल्वर नाइट्रेट) या पारे (Hg) का प्रयोग किया जाता है।
- दर्पण को समतल व गोलीय दो भागों में बांटा जाता है।



समतल दर्पण

यदि परावर्तक पृष्ठ समतल हों तो उस दर्पण को 'समतल दर्पण' कहते हैं। यदि परावर्तक पृष्ठ गोलीय हो तो दर्पण को 'गोलीय दर्पण' कहते हैं।

समतल दर्पण में प्रतिबिम्ब

- समतल दर्पण से प्राप्त प्रतिबिम्ब सदैव आभासी व सीधा होता है।
- प्रतिबिम्ब का आकार वस्तु के आकार के बराबर होता है।
- प्रतिबिम्ब दर्पण के पीछे उतनी ही दूरी पर बनता है, जितनी की दूरी पर वस्तु दर्पण से दूर है।
- वस्तु का पूरा प्रतिबिम्ब देखने हेतु दर्पण की ऊँचाई वस्तु की ऊँचाई से आधी होनी चाहिए।
- जब कोई दो दर्पण एक दूसरे के साथ किसी कोण पर झुके हुए हों तो उनमें बनने वाले प्रतिबिम्बों की संख्या (n)

$$n = \frac{360}{\theta} - 1$$

जहाँ θ दो दर्पणों के मध्य कोण।

- यदि कोई वस्तु दो दर्पण जो 90° कोण पर रखे दर्पणों के बीच रखी हो तो बनने वाले प्रतिबिम्बों की संख्या 3 होगी।

$$\left[n = \frac{360}{\theta} - 1 \right], \theta = 90^\circ$$

$$n = \frac{360}{90} - 1$$

$$n = 3$$

- यदि दोनों दर्पण समान्तर हों तो बनने वाले प्रतिबिम्बों की संख्या अनन्त होगी।
- यदि कोई वस्तु दर्पण के सापेक्ष V चाल से गतिमान हो तो वस्तु व प्रतिबिम्ब की सापेक्ष चाल $2V$ होगी।
- गोलीय दर्पण –
 - खोखले शीशे के गोले का भाग होता है।
 - प्रकृति धातु की दर्पण से दूरी पर निर्भर करता है
 - यदि दर्पण की उभरे भाग की कलाई की जाती है तो – उत्तल दर्पण।
 - धँसे भाग की कलाई करने पर अवतल दर्पण कहलाता है।

लेन्स (Lens)

- दो गोलीय या एक गोलीय एवं एक समतल सतह से शीशे के बने प्रकाशिक यंत्र (Optical Instrument) को लेंस कहते हैं।
- दो गोलीय सतहों वाले लेन्स को अवतल (Concave) तथा उत्तल (Convex) में वर्गीकृत किया जाता है।
- लेन्सों की आपतित किरणों को मोड़ने की क्षमता को उसकी शक्ति कहते हैं। लेन्स की शक्ति लेन्स के फोकस के व्युत्क्रम के बराबर होता है ($P = 1/f$) लेन्स की शक्ति का मात्रक डाइऑप्टर (Diopter) होता है, जिसे D द्वारा सूचित किया जाता है।

उत्तल लेन्स (Convex Lens)

- इसके दोनों सतह उभरे होते हैं।
- शीर्ष का भाग संकरा (narrow) तथा बीच का भाग चौड़ा होता है।
- इसका प्रधान फोकस धनात्मक होता है। अतः इसकी क्षमता भी धनात्मक होती है।
- इसमें किसी वस्तु की प्रतिबिम्ब की स्थिति एवं प्रकृति वैसी ही होती है जैसे अवतल दर्पण में होता है। उपयोग: कैमरा, सूक्ष्मदर्शी, दूरदर्शी तथा दूर-दृष्टि दोष वाले व्यक्ति के चश्मे में।

अवतल लेन्स (Concave Lens)

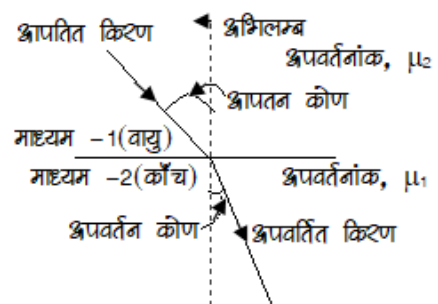
- इसका दोनों भाग धँसा होता है।
- इसमें बनने वाले प्रतिबिम्ब की स्थिति एवं प्रकृति उत्तल दर्पण की तरह होती है।
- इसकी फोकस दूरी ऋणात्मक (Negative) होती है। अतः इसकी क्षमता भी ऋणात्मक होती है। उपयोग: गैलीलियो दूरदर्शी के नेत्रिका तथा निकट दृष्टि दोष वाले व्यक्ति के चश्मे में।

प्रकाश का अपवर्तन

जब प्रकाश एक माध्यम (जैसे- वायु) से दूसरे माध्यम (जैसे- काँच) में जाता है तो इसका एक भाग पहले माध्यम में वापस आ जाता है तथा शेष भाग दूसरे माध्यम में प्रवेश कर जाता है। जब यह दूसरे माध्यम से गुजरता है तो इसकी संचरण दिशा परिवर्तित हो जाती है। यह अभिलम्ब की ओर झुक जाती है या अभिलम्ब से दूर हट जाती है।

यह परिघटना अपवर्तन (Refraction) कहलाती है। प्रकाश के अपवर्तन में, जब प्रकाश एक माध्यम से दूसरे माध्यम में जाता है तो इसकी तीव्रता घट जाती है। **अपवर्तन के दो नियम हैं-**

- आपतित किरण, आपतन बिन्दु पर अभिलम्ब व अपवर्तित किरण तीनों एक ही तल में होते हैं।
- आपतन कोण की ज्या ($\sin i_1$) व अपवर्तन कोण की ज्या ($\sin i_2$) का अनुपात एक नियतांक होता है, जिसे दूसरे माध्यम का पहले माध्यम के सापेक्ष अपवर्तनांक कहते हैं।



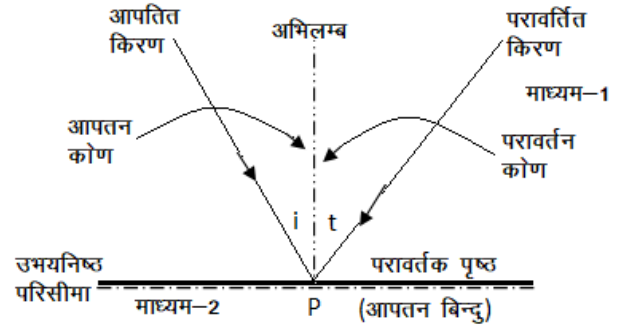
प्रकाश के अपवर्तन के कुछ व्यावहारिक उदाहरण

- सघन माध्यम में स्थित वस्तु को विरल माध्यम से देखने पर वस्तु सम्पर्क पृष्ठ के निकट दिखई देती है; जैसे—जल के अन्दर मछली जहाँ दिखई देती है, तालाब में उससे नीचे स्थित होती है।
- पानी में पडी हुई कोई लकड़ी या कलम बाहर से देखने पर तिरछी दिखई देती है।
- उगते तथा डूबते समय सूर्य क्षितिज के नीचे होने पर भी दिखाई देता है।
- यदि कोई सिक्का किसी बर्तन में इस प्रकार रखा है कि किनारों के कारण दिखाई नहीं दे रहा, तब बर्तन में पानी डालने पर दिखाई देने लगता है।
- वायुमण्डलीय अपवर्तन के कारण आकाश में तारे टिमटिमाते प्रतीत होते हैं।
- अग्रिम सूर्योदय एवं विलम्बित सूर्यास्त वायुमण्डलीय अपवर्तन के कारण होता है।

प्रकाश का परावर्तन

जब प्रकाश की किरण सतह पर पडती है और समान माध्यम में वापस लौट जाती है तो यह परिघटना प्रकाश का परावर्तन

(Reflection) कहलाती है। परावर्तन में आवृत्ति, चाल तथा तरंगदैर्घ्य अपरिवर्तित रहती है, परन्तु इसमें एक कलान्तर उत्पन्न हो जाता है, जो कि परावर्तन पृष्ठ की प्रकृति पर निर्भर करता है।

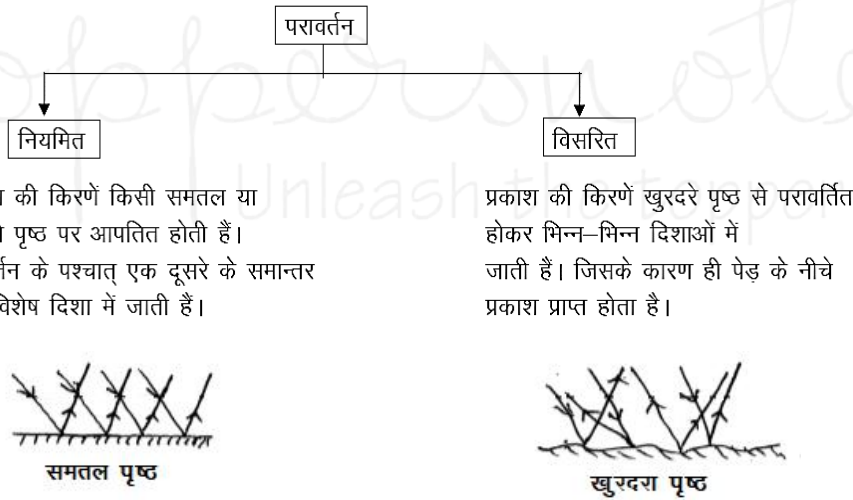


प्रकाश का परावर्तन

परावर्तन के दो नियम हैं

- आपतन कोण = परावर्तन कोण अर्थात् $\angle i = \angle r$
- आपतित किरण, परावर्तित किरण तथा अभिलम्ब तीनों एक ही तल में होती हैं।

प्रकाश का परावर्तन



परावर्तन (Reflection) के अनुप्रयोग (Application)

- मेगाफोन (Megaphone): भीड़ को संबोधित करने वाला एक ध्वनि विस्तारक यंत्र।
- हृदय श्रवण यंत्र (Stethoscope): डॉक्टरों के द्वारा प्रयोग किया जाने वाला हृदय तथा शारीरिक संवेदना ज्ञात करने वाला यंत्र।
- ध्वनि पट्ट (Sound Board): स्टेज के पीछे ध्वनि के परावर्तन के लिए लगी पट्टी।
- श्रवण सहाय (Hearing Aid): बधिरों के द्वारा प्रयुक्त एक उपकरण।

- मरमर श्राव गैलरी (Whispering Gallery): भारत के गोल गुम्बज तथा सेंट पॉल चर्च लन्दन में स्थित एक ऐसा स्थान जहाँ ध्वनि के परावर्तन के अभाव में ध्वनि बहुत धीमी सुनाई पडती है।

पूर्ण आन्तरिक परावर्तन

जब प्रकाश की किरण सघन माध्यम से विरल माध्यम में जाती है, तो आपतन कोण का मान बढ़ाने पर अपवर्तन कोण का मान भी बढ़ता है। आपतन कोण के जिस मान के लिए अपवर्तन कोण का मान 90° हो जाता है क्रान्तिक कोण (Critical Angle) कहलाता है। इसे θ_c से प्रकट करते हैं।

पूर्ण आन्तरिक परावर्तन के कारण घटने वाली कुछ घटनाएं एवं अनुप्रयोग (Applications)–

- (i) मृग मरीचिका (Mirage) का बनना: गर्मी के दिनों में रेगिस्तान में पेड़ की उल्टी छाया को हिलते देख जल का भ्रम होना।
- (ii) उन्न मरीचिका (Looming) का बनना: बर्फीले क्षेत्रों में समुद्र की जहाजों का हवा में उल्टा लटकने होने का भ्रम होता है।

प्रकाशित तन्तु

प्रकाशित तन्तु पूर्ण आन्तरिक परावर्तन के सिद्धान्त पर आधारित युक्ति है। प्रकाशित तन्तु (Optical Fibre) एक ऐसी युक्ति है जिसके द्वारा संकेतो (Signals) को इसकी तीव्रता में बिना क्षय हुए, एक स्थान से दूसरे स्थान तक स्थानान्तरित किया जा सकता है। प्रकाशिक तन्तु क्वाटर्ज काँच के बहुत लम्बे तथा पतले हजारों रेशो से मिलकर बना होता है।

प्रकाश का वर्ण विक्षेपण (Dispersion of Light)

सूर्य का प्रकाश जब किसी प्रिज्म से गुजरता है तब अपवर्तन के कारण प्रिज्म के आधार की ओर झुकने के साथ विभिन्न रंगों के प्रकाश में बँट जाता है। इस प्रकार प्राप्त रंगों के समूह को वर्णक्रम (Spectrum) कहते हैं तथा प्रकाश के विभिन्न रंगों में विभक्त होने को वर्ण विक्षेपण कहते हैं। सूर्य के प्रकाश से प्राप्त रंगा में बैंगनी रंग का विक्षेपण अधिक होने के कारण सबसे नीचे तथा लाल रंग का विक्षेपण कम होने के कारण सबसे उपर प्राप्त होता है। नीचे से उपर की ओर विभिन्न रंगों का क्रमशः बैंगनी, जामुनी, नीला, हरा, पीला, नारंगी तथा लाल है। इसे संक्षेप में बैजनीहपीनाला (VIBGYOR) कहते हैं।

प्रकाश का प्रकीर्णन (Scattering of Light)

जब सूर्य का प्रकाश वायुमण्डल से गुजरता है तो प्रकाश वायुमण्डल में उपस्थित कणों द्वारा विभिन्न दिशाओं में फैल जाता है, इसी प्रक्रिया को प्रकाश का प्रकीर्णन कहते हैं। किसी रंग का प्रकीर्णन उसकी तरंग दैर्ध्य पर निर्भर करता है। जिस रंग के प्रकाश की तरंग दैर्ध्य कम होती है उसका प्रकीर्णन अधिक तथा अधिक तरंग दैर्ध्य वाले का प्रकीर्णन कम होता है। सूर्य के प्रकाश में बैंगनी रंग का तरंग दैर्ध्य सबसे कम होने के कारण प्रकीर्णन सर्वाधिक तथा लाल रंग की तरंग दैर्ध्य सर्वाधिक होने के कारण प्रकीर्णन सबसे कम होता है। बैंगनी रंग का प्रकीर्णन सर्वाधिक होने के कारण ही आकाश नीला दिखाई देता है और लाल रंग के प्रकीर्णन कम होने के कारण ही डूबते व उगते समय सूर्य लाल दिखाई देता है क्योंकि अन्य रंगों का प्रकीर्णन हो जाता है। प्रकीर्णन के कारण ही समुद्र का पानी भी नीला दिखाई देता है। अन्तरिक्ष से अन्तरिक्ष यात्रियों को आकाश काला दिखाई देता है क्योंकि वहां वायुमण्डल न होने के कारण प्रकाश का प्रकीर्णन नहीं होता है। चन्द्रमा से भी आकाश काला ही दिखाई देता है।

वस्तुओं का रंग (Colour of Objects)

प्रकाश किरणें जब वस्तुओं पर पड़ती हैं तो वे वस्तु परावर्तित होकर देखने वाले की आँखों में प्रवेश करती हैं और वस्तु दिखाई देने लगती है। वस्तुएं प्रकाश का कुछ भाग परावर्तित करती हैं तथा कुछ भाग अवशोषित करती हैं प्रकाश का परावर्तित भाग ही वस्तुओं का रंग निर्धारित करता है। जैसे गुलाब की पतियाँ हरे रंग को तथा पंखुडियाँ लाल प्रकाश को परावर्तित करने के कारण हरी एवं लाल दिखती हैं।

रंगों का मिश्रण

नीले, लाल एवं हरे रंगों को उपयुक्त मात्रा में मिलाकर अन्य रंगों को प्राप्त किया जा सकता है। इन्हें प्राथमिक रंग कहते हैं रंगीन टेलीविजन में इन्हीं का प्रयोग किया जाता है। पीला, मैजेंटा, पीकॉक ब्लू को द्वितीयक रंग कहते हैं। जिन दो रंगों को परस्पर मिलाने से सफेद प्रकाश उत्पन्न होता है उन्हें पूरक रंग कहते हैं।

इन्द्र धनुष (Rainbow)

इन्द्र धनुष बनने का कारण परावर्तन, पूर्ण आंतरिक परावर्तन तथा अपवर्तन है। इन्द्रधनुष हमेशा सूर्य के विपरीत दिशा में दिखायी देती है और यह प्रातः पश्चिम में एवं सायंकाल पूर्व दिशा में ही दिखायी देती है। इन्द्र धनुष दो प्रकार की होती है प्राथमिक एवं द्वितीयक। जब बूदों पर आपतित सूर्य किरणों को दो बार अपवर्तन तथा एक बार परावर्तन हो तो द्वितीय इन्द्रधनुष बनता है इसमें लालरंग अन्दर की ओर कुछ धुँधला दिखायी देती है।

प्रकाश का विवर्तन (Diffraction of Light)

प्रकाश के अवरोधों के किनारों पर मुड़ने की घटना को प्रकाश का विवर्तन कहते हैं। विवर्तन के कारण अवरोध की छाया के किनारे तीक्ष्ण नहीं होते इसी कारण दूरदर्शी में तारों की प्रतिबिम्ब तीक्ष्ण बिन्दुओं के रूप में न दिखायी देकर अस्पष्ट धब्बों के रूप में दिखायी देते हैं। विवर्तन प्रकाश के तरंग प्रकृति की पुष्टि करता है। ध्वनि तरंगों अवरोधों से आसानी से मुड़ जाती है और श्रोता तक पहुँच जाती है।

प्रकाश तरंगों का व्यतिकरण (Interference of Light)

जब समान आवृत्ति व समान आयाम की दो प्रकाश तरंगें मूलतः एक ही प्रकाश स्रोत से एक ही दिशा में संचरित होती हैं तो माध्यम के कुछ बिन्दुओं पर प्रकाश की तीव्रता अधिकतम व कुछ बिन्दुओं पर तीव्रता न्यूनतम होती है। इस घटना को ही प्रकाश तरंगों का व्यतिकरण कहते हैं। जिन बिन्दुओं पर प्रकाश की तीव्रता अधिकतम होती है वहाँ हुए व्यतिकरण को संयोजी व्यतिकरण (Constructive Interference) तथा जिन बिन्दुओं पर तीव्रता न्यूनतम होती है वहाँ हुए व्यतिकरण को विनाशी व्यतिकरण (Destructive Interference) कहते हैं। दो स्वतंत्र स्रोतों से निकले प्रकाश तरंगों में व्यतिकरण की घटना नहीं होती है। जल की सतह पर फैले मिट्टी के तेल तथा साबुन के बुलबुलों का रंगीन दिखाई देना व्यतिकरण का उदाहरण है।

सारणी – अवतल दर्पण में बनने वाले प्रतिबिम्ब

बिम्ब की स्थिति	प्रतिबिम्ब की स्थिति	प्रतिबिम्ब का स्वरूप	प्रतिबिम्ब का आकार
अनन्त दूरी पर	फोकस F पर	वास्तविक व उल्टा	अत्यधिक छोटा
वक्रता केन्द्र C व अनन्त के मध्य	फोकस F व वक्रता केन्द्र C के बीच	वास्तविक व उल्टा	छोटा
वक्रता केन्द्र C पर	वक्रता केन्द्र C पर	वास्तविक व उल्टा	वस्तु के बराबर
वक्रता केन्द्र C व फोकस F के बीच	वक्रता केन्द्र C से दूर	वास्तविक व उल्टा	बड़ा
फोकस F पर	अनन्त पर	वास्तविक व उल्टा	बहुत बड़ा
फोकस F व ध्रुव के बीच	दर्पण के पीछे	आभासी व सीधा	बड़ा

सारणी – उत्तल दर्पण में बनने वाले प्रतिबिम्ब

बिम्ब की स्थिति	प्रतिबिम्ब की स्थिति	प्रतिबिम्ब का स्वरूप	प्रतिबिम्ब का आकार
अनन्त पर	दर्पण के पीछे फोकस F पर	आभासी व सीधा	अत्यधिक छोटा बिन्दुवत
अनन्त व ध्रुव के बीच किसी भी दूरी पर	दर्पण के पीछे ध्रुव व फोकस के बीच	आभासी व सीधा	छोटा

सारणी – उत्तल लेंस से प्रतिबिम्ब निर्माण

बिम्ब की स्थिति	प्रतिबिम्ब की स्थिति	प्रतिबिम्ब का स्वरूप	प्रतिबिम्ब का आकार
अनन्त पर	फोकस F_2 पर	वास्तविक व उल्टा	अत्यधिक छोटा
अनन्त व $2F_1$ के बीच	F_2 व $2F_2$ के बीच	वास्तविक व उल्टा	छोटा
$2F_1$ पर	$2F_2$ पर	वास्तविक व उल्टा	बराबर आकार
$2F_1$ व F_1 के बीच	$2F_2$ व अनन्त के बीच	वास्तविक, उल्टा	वस्तु से बड़ा
F_1 पर	अनन्त पर	वास्तविक व उल्टा	अत्यधिक आवर्धित
F_1 व प्रकाशिक केन्द्र के बीच	लेंस के उसी तरफ वस्तु की ओर	आभासी व सीधा	वस्तु से बड़ा

सारणी – अवतल लेंस से प्रतिबिम्ब निर्माण

बिम्ब की स्थिति	प्रतिबिम्ब की स्थिति	प्रतिबिम्ब का स्वरूप	प्रतिबिम्ब का आकार
अनन्त पर	फोकस F_1 पर	आभासी व सीधा	अत्यधिक छोटा
अनन्त व प्रकाशिक केन्द्र के बीच	प्रकाशिक केन्द्र के बीच में	आभासी व सीधा	वस्तु से छोटा

मानव नेत्र एवं दृष्टि दोष

दृष्टि दोष	कारण	निवारण/उपचार
निकट दृष्टि (Myopia)	1. नेत्र-गोलक का लम्बा हो जाने से और 2. नेत्र लेंस आवश्यकता से अधिक मोटा हो जाने से।	अपसारी या अवतल लेंस (Diverging or Concave) का प्रयोग करके।
दूर दृष्टि (Hypermetropia)	1. नेत्र-गोलक (मलम-इंसस) के छोटा हो जाने से, और 2. नेत्र लेंस का आवश्यकता से अधिक पतला हो जाने से।	अभिसारी या उत्तल लेंस (Converging or Convex) का प्रयोग करके।
जरा-दूरदर्शिता (Presbyopia)	1. नेत्र लेंस की लचक कम हो जाने से, और 2. सिलियरी मांसपेशियों की समंजन क्षमता घट जाने से।	बाइफोकल (Bifocal) लेंस का प्रयोग करके।
आस्टिगमेटिज्म (Astigmatism)	1. कॉर्निया के क्षैतिज हो जाने से, और 2. कॉर्निया की ऊर्ध्वाधर वक्रता के असमान हो जाने से।	बेलनाकार लेंस (Cylindrical lens) का प्रयोग करके।

विद्युत धारा (Electric Current)

विद्युत धारा

- आवेशों के प्रवाह की दर को विद्युत धारा कहते हैं।
- किसी भी परिपथ में किसी बिन्दु से इकाई समय में गुजरने वाले आवेश की मात्रा को विद्युत धारा कहते हैं।

$$\text{विद्युत धारा} = \frac{\text{आवेश}}{\text{समय}} \quad I = \frac{Q}{t}$$

- विद्युत धारा का मात्रक –

$$I = \frac{Q}{t} = \frac{\text{कूलॉम}}{\text{सेकण्ड}} = \text{एम्पीयर}$$

- यदि किसी विद्युत परिपथ में किसी बिन्दु से 1 सेकण्ड में एक कूलॉम आवेश गुजरता है तो उस परिपथ में धारा एक एम्पीयर होगी।
- विद्युत धारा का मापन – अमीटर (श्रेणीक्रम परिपथ में)



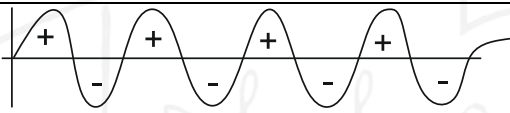
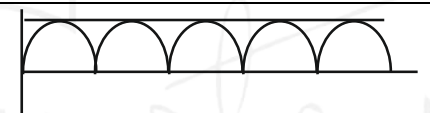
विभव एवं विभवान्तर

- विद्युत विभव – एकांक धनावेश को अनन्त से विद्युत क्षेत्र के किसी बिन्दु तक लाने में जो कार्य करना पड़ता है, उसे विद्युत विभव कहते हैं। यह एक अदिश राशि है।
- मात्रक – जूल/कूलॉम या वोल्ट (S.I. पद्धति)
- विभवान्तर – किसी विद्युत परिपथ एकांक धनावेश को एक बिन्दु से दूसरे बिन्दु तक ले जाने में किया गया कार्य उन दोनों बिन्दुओं के मध्य विभवान्तर के बराबर होता है।
- दो बिन्दु A व B के मध्य विभवान्तर

$$V_A - V_B = \frac{W}{Q}$$

- मात्रक – जूल/कूलॉम या वोल्ट
- विभवान्तर का मापन – वोल्टमीटर (समान्तर क्रम में परिपथ में)

प्रत्यावर्ती धारा (AC) व दिष्ट धारा (DC) में अंतर

प्रत्यावर्ती धारा (AC)	दिष्ट धारा (DC)
	
इस धारा में प्रत्येक आधे चक्कर में धारा का मान व दिशा बदल जाते हैं।	इसमें धारा का मान व दिशा समान रहता है।
सामान्य घरों में 220 वोल्ट की AC धारा एवं 50 Hz आवृत्ति होती है।	इसकी आवृत्ति शून्य होती है। यह सेल एवं बैटरी से प्राप्त की जाती है।
केवल ऊष्मीय/तापीय प्रभाव दर्शाती है।	यह ऊष्मीय, चुम्बकीय व रासायनिक प्रभाव दर्शाती है।
$A.C. \xrightarrow[\text{Rectifier}]{\text{दिष्टकारी}} D.C.$	$D.C. \xrightarrow[\text{Inverter}]{\text{इनवर्टर}} A.C.$

नोट – D.C. की तुलना में A.C. का महत्वपूर्ण लाभ यह है कि विद्युत शक्ति को सुदूर स्थानों पर बिना अधिक ऊर्जा क्षय किए पहुँचाया जा सकता है।

ओम का नियम (Ohm's Law)

यदि किसी चालक की भौतिक अवस्था जैसे ताप, दाब, लम्बाई, क्षेत्रफल आदि स्थिर रहे तो उसके सिरों के मध्य उत्पन्न विभवान्तर (V) प्रवाहित धारा (I) के समानुपाती होती है।

$$V \propto I$$

$$V = RI$$

जहाँ R एक स्थिरांक है जिसे चालक का प्रतिरोध कहते हैं।

$$R = V/I$$

प्रतिरोध का मात्रक = वोल्ट/एम्पीयर = ओम (Ω)

यदि किसी चालक तार में 1 एम्पीयर की धारा प्रवाहित करने पर उसके सिरों के मध्य 1 वोल्ट विभवान्तर उत्पन्न होता है, तो उस चालक का प्रतिरोध 1 ओम कहलाएगा।

नोट – चालकों में आवेशों के प्रवाह में उत्पन्न बाधा को प्रतिरोध कहते हैं।

- ओम का नियम सार्वत्रिक नियम नहीं है। ये गैसों, विद्युत अपघट्यों तथा क्रिस्टल दिष्टकारी पर लागू नहीं होता है।

प्रतिरोध (Resistance)

- चालकों में आवेशों के प्रवाह में उत्पन्न बाधा को प्रतिरोध कहते हैं।

$$\text{ओम के नियमानुसार} = V \propto I$$